बी ए भूगोल पार्ट-2, पेपर-IV, इकाई-1

विश्व में कृषि के प्रकार (Types of Farming in the World)

गतांक से आगे.....

विस्तृत वाणिज्य खाद्यान्न कृषि

यह विश्व के शीतोष्ण प्रदेशों (मध्य अक्षांशीय प्रदेशों) के आंतरिक भागों में किया जाता है । ये भाग लगभग अर्ध शुष्क होते हैं । जहां यदा-कदा बारिश होती है । इन भागों में मुख्य रूप से **गेहूं** की कृषि होती है और इसके अलावा मक्का, जौ, जई इत्यादि की भी खेती हो जाती है । यहां खेतों का आकार बहुत बड़ा होता है इसलिए सारा काम मशीनों से होता है । शारीरिक श्रम कम से कम इस्तेमाल होता है । इसी कारण यहां प्रति व्यक्ति उत्पादन बहुत अधिक होता है जबकि प्रति हेक्टेयर उत्पादन कोई मायने नहीं रखता है ।

https://relatedagriculture.blogspot.com/2019/01/what-are-types-of-agriculture.html

https://nroer.gov.in/55ab34ff81fccb4f1d806025/file/57cff65516b51c038dedce8c

प्रमुख क्षेत्र: यूरेशिया के क्षेत्र स्टेपीज, उत्तरी अमेरिका का प्रेयरी क्षेत्र, दक्षिण अमेरिका का पंपास क्षेत्र, दक्षिण अफ्रीका का वेल्ड मैदान और ऑस्ट्रेलिया का डाउंस व् न्यूजीलैंड का सेंटरबरी मैदान आदि ।

मिश्रित कृषि

यह विश्व के विकसित मध्य अक्षांशीय प्रदेशों में किया जाता है । इन प्रदेशों में गेहूं के साथ-साथ मकई, जौ, जई और चारा उगाया जाता है । यहाँ खेतों का आकार मध्यम होता है । फसल चक्रीकरण व् अंतर-फसल द्वारा की उर्वरता बरकरार रखी जाती है । यहां चारा पर विशेष ध्यान दिया जाता है क्योंकि खेतों में ही पशुओं का पालन भी किया जाता है । जैसे गाय, भेड़, सूअर तथा कुक्कुट । इस प्रकार की मिश्रित कृषि में बहुत अधिक लागत आती है परंतु आय भी बहुत होती है । यहां बड़े-बड़े मशीन, बड़े बिल्डिंग, रसायनिक खाद, हरी खाद का प्रयोग होता है ।

https://www.smart-akis.com/wp-content/uploads/techhtmpdf/176.htm

https://nroer.gov.in/55ab34ff81fccb4f1d806025/file/57cff65816b51c038dedceaf

प्रमुख क्षेत्र: उत्तर पश्चिमी यूरोप, उत्तर अमेरिका का पूर्वी भाग, यूरेशिया तथा दक्षिण महाद्वीपों के शीतोष्ण अक्षांशीय प्रदेश ।

डेयरी फार्मिंग

यह कृषि अधिकांशत उन देशों में की जाती है जो प्राकृतिक एवं वानस्पतिक दृष्टि से चरागाह के लिए अधिक अनुकूल है । यह ज्यादातर बड़े शहरों के नजदीक ही किया जाता है । इसमें बहुत अधिक लागत आती है, जैसे पशुओं का बड़ा बनाना, भंडारण, उनके चारे की व्यवस्था करना और सबसे अधिक ध्यान पशुओं के स्वास्थ्य और उनके प्रजनन पर दिया जाता है ताकि पशुओं का नस्ल अच्छा बना रहे और दूध भी ज्यादा मात्रा में निकलता रहे । इसमें श्रम की भी काफी आवश्यकता होती है । पशुओं को खिलाने-पिलाने से लेकर उनके दूध निकालने तक में सस्ते श्रम की आवश्यकता होती है । वर्मी कंपोस्ट का भी उत्पादन पशुओं के गोबर से किया जाता है । आज शहरों में विभिन्न प्रकार के डेयरी उत्पादों जैसे कि दूध, दही, पनीर, छांछ, खोया, पाउडर इत्यादि की मांग बढ़ गई है जिसकी पूर्ति हेतु डेयरी फार्मिंग द्रुत गति से विकास कर रहा है ।

https://www.adb.org/results/peoples-republic-china-prc-sustainable-dairy-farming-and-milk-safety

https://nroer.gov.in/5645d28d81fccb60f166681d/file/57cff65b16b51c038dedced2

प्रमुख क्षेत्र: उत्तर-पश्चिमी यूरोप, कनाडा, दक्षिण-पूर्वी ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड व तस्मानिया आदि ।

भूमध्यसागरीय कृषि

विश्व में उन जगहों पर की जाती है जहां भूमध्यसागरीय प्रकार की जलवायु पाई जाती है । इन क्षेत्रों में शीत ऋतु में वर्षा होती है और यहां रसदार फलों की खेती होती है । यह पूर्ण रूप से वाणिज्यिक कृषि है । अंगूर, संतरा वंशीय फल, जैतून आदि प्रमुख हैं ।
प्रमुख क्षेत्र: दक्षिणी यूरोप, उत्तरी अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका के चिली, दक्षिण-पश्चिम साउथ अफ्रीका, दक्षिणी कैलिफोर्निया, दक्षिण-पश्चिम ऑस्ट्रेलिया ।

ट्रक फार्मिंग या हॉर्टिकल्चर

इसमें मुख्य रूप से शहरों में प्रतिदिन उपयोग में आने वाली फसलों का उत्पादन होता है, जैसे सब्जी, फल और फूल । इन सभी को ट्रक में भरकर शहर में भेजा जाता है, इसलिए इसे ट्रक फार्मिंग भी कहा जाता है । इस कृषि में श्रम, पूंजी, सिंचाई, उच्च उपजी (HYV) बीज, खाद, उर्वरक कीटनाशी इत्यादि पर ध्यान दिया जाता है ।
प्रमुख क्षेत्र: उत्तर पश्चिमी यूरोप, पूर्वी उत्तर अमेरिका और भूमध्यसागरीय प्रदेश आदि ।

सहकारी कृषि

यह एक प्रकार का किसानों द्वारा स्थापित स्वयं सहायता समूह होता है जिसमें किसान एक समूह बनाते हैं । उसमें आर्थिक योगदान देते हैं और उन्हीं में से एक दूसरे को ऋण भी प्रदान करते हैं, जिसका उपयोग खेती में किया जाता है । इस प्रकार कोऑपरेटिव सोसाइटी स्थापित होती है । यह किसानों को सहायता प्रदान करती हैं और इनका मुख्य लक्ष्य होता है सस्ते दर पर उच्च क्वालिटी का उत्पाद तैयार करना । यह यूरोप के कई देशों में सफलतापूर्वक संचालित है जैसे डेनमार्क, नीदरलैंड, बेल्जियम, स्वीडन, इटली आदि ।

सामूहिक कृषि

इस कृषि को अपनाने के पीछे दो मुख्य आधार हैं, कृषि जोतो के छोटे तथा विखरे होने की समस्या का समाधान तथा भूमि का सामाजिकरण कर भूमिहीनों, छोटे किसानों तथा कृषि श्रमिकों के साथ न्याय करना । कृषि की इस प्रणाली में किसान परस्पर लाभ के उद्देश्य से स्वेक्षापूर्वक अपनी भूमि, श्रम और पूंजी को एकत्र करके सामूहिक रूप से कृषि करते हैं । यह एक रशियन मॉडल है जिसमें भूमि पर स्वामित्व पूरे समाज का होता है, किसी व्यक्ति का नहीं । इसमें सभी किसान थोड़ी सी जमीन अपने पास रखते हैं जिससे उनकी दिन-प्रतिदिन की जरूरतें पूरी हो सके और इसी सामाजिक मालिकाना वाले कृषि को सामूहिक कृषि कहते हैं । कृषि के लिए लक्ष्य निर्धारित किये जाते हैं और कृषि उत्पाद सरकार ही एक निर्धारित दर पर

भूगोल विभाग राजा सिंह महाविद्यालय सिवान

खरीद लेती है । लक्ष्य से अधिक उत्पाद किसानों के बीच बांट दिए जाते हैं । यह सिर्फ विश्व के साम्यवादी देशों में ही प्रचलित हो पाया ।

कृषि के प्रकार

विटीकल्चर - अंगूरों का व्यापारिक स्तर पर उत्पादन
पीसी कल्चर - मछली उत्पादन
सेरीकल्चर - रेशम उत्पादन
हॉर्टिकल्चर - फल और सब्जियों का उत्पादन
ओलिविकल्चर - जैतून का उत्पादन
अरबोरिकल्चर - वृक्षों एवं झाड़ियों की कृषि
एपी कल्चर - शहद उत्पादन
फ्लोरीकल्चर - फूलों की कृषि
सिल्वीकल्चर - वनों के संरक्षण व संवर्धन
वेजिकल्चर - दक्षिण पूर्व एशिया में आदि मानव द्वारा की गई प्रारंभिक आदम कृषि
नेमरी कल्चर - संग्रहण का काम
ओलेरीकल्चर - जमीन पर फैलने वाली सब्जियों की व्यापारिक कृषि
मैरीकल्चर - समुद्री जीवो के उत्पादन
वर्मी कल्चर - कृषि उत्पादों में वृद्धि हेतु केंचुओ का पालन

इस प्रकार विश्व के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न प्रकार की कृषि की जाती है । इन प्रकारों का देश कल परिस्थिति अपना विशेष महत्व रहा है ।

- सन्दर्भ: विश्व का भूगोल: महेश वर्णवाल, एन सी ई आर टी, INTERNET

बोलेन्द्र कुमार अगम, सहायक प्राध्यापक, भूगोल, राजा सिंह कॉलेज, सिवान

भूगोल विभाग राजा सिंह महाविद्यालय सिवान